سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾ فَذَكِّرْ ۟ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

बिछाई गई तो तुम नसीहत सुनाओ[12] तुम तो येही नसीहत सुनाने वाले हो तुम कुछ उन पर कड़ोड़ा (निगहबान) नहीं[13]

اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾ اِنَّ اِلَيْنَآ

हां जो मुंह फेरे[14] और कुफ़्र करे[15] तो उसे अल्लाह बड़ा अ़ज़ाब देगा[16] बेशक हमारी ही त़रफ़

اِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

उन का फिरना है[17] फिर बेशक हमारी ही त़रफ़ उन का हिसाब है

اٰياتها ٣٠ — ٨٩ سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ ١٠ — ركوعها ١

सूरए फ़ज्र मक्किय्या है, इस में तीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ﴿٤﴾

उस सुब्ह़ की क़सम[2] और दस रातों की[3] और जुफ़्त और त़ाक़ की[4] और रात की जब चल दे[5]

هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾

क्यूं इस में अ़क़्ल मन्द के लिये क़सम हुई[6] क्या तुम ने न देखा[7] तुम्हारे रब ने आ़द के साथ कैसा किया

12 : अल्लाह तआ़ला की ने'मतों और उस के दलाइले क़ुदरत बयान फ़रमा कर। 13 : कि जब्र करो। "هٰذِهِ الْاٰيَةُ نُسِخَتْ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ" या'नी येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है 14 : ईमान लाने से 15 : बा'द नसीह़त के 16 : आख़िरत में कि उसे जहन्नम में दाख़िल करेगा 17 : बा'द मौत के। 1 : "सूरतुल फ़ज्र" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्तीस या तीस आयतें, एक सो उन्तालीस कलिमे, पांच सो सत्तानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : मुराद इस से या यकुम मुह़र्रम की सुब्ह़ है जिस से साल शुरूअ़ होता है या यकुम ज़िल ह़िज्जा की जिस से दस रातें मिली हुई हैं या ईदुल अज़्ह़ा की सुब्ह़ और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि मुराद इस से हर दिन की सुब्ह़ है क्यूं कि वोह रात के गुज़रने और रोशनी के ज़ाहिर होने और तमाम जानदारों के त़लबे रिज़्क़ के लिये मुन्तशिर होने का वक़्त है और येह मुर्दों के क़ब्रों से उठने के वक़्त के साथ मुशाबहत व मुनासबत रखता है। 3 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मुराद इन से ज़िल ह़िज्जा की पहली दस रातें हैं क्यूं कि येह ज़माना आ'माले ह़ज में मश्ग़ूल होने का ज़माना है और ह़दीस शरीफ़ में इस अ़शरे की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं और येह भी मरवी है कि रमज़ान के अ़शरए अख़ीरा की रातें मुराद हैं या मुह़र्रम के पहले अ़शरे की। 4 : हर चीज़ के या उन रातों के या नमाज़ों के और येह भी कहा गया है कि जुफ़्त से मुराद ख़ल्क़ और त़ाक़ से मुराद अल्लाह तआ़ला है। 5 : या'नी गुज़रे, येह पांचवीं क़सम है आ़म रात की, इस से पहले दस ख़ास रातों की क़सम ज़िक्र फ़रमाई गई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि इस से ख़ास शबे मुज़्दलिफ़ा मुराद है जिस में बन्दगाने ख़ुदा त़ाअ़ते इलाही के लिये जम्अ़ होते हैं। एक क़ौल येह है कि इस से शबे क़द्र मुराद है जिस में रह़मत का नुज़ूल होता है और जो कस्रते सवाब के लिये मख़्सूस है। 6 : या'नी येह उमूर अरबाबे अ़क़्ल के नज़्दीक ऐसी अ़ज़मत रखते हैं कि ख़बरों को इन के साथ मुअक्कद करना शायां है क्यूं कि येह ऐसे अ़जाइब व दलाइल पर मुश्तमिल हैं जो अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और उस की रबूबिय्यत पर दलालत करते हैं और जवाबे क़सम येह है कि काफ़िर ज़रूर अ़ज़ाब किये जाएंगे, इस जवाब पर अगली आयतें दलालत करती हैं। 7 : ऐ सय्यिदे आ़लम ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم।

www.dawateislami.net

اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۙ﴿۷﴾ الَّتِیْ لَمْ یُخْلَقْ مِثْلُهَا فِی الْبِلَادِ ۙ﴿۸﴾ وَ ثَمُوْدَ

वोह इरम हद से ज़ियादा तूल वाले[8] कि उन जैसा शहरों में पैदा न हुवा[9] और समूद

الَّذِیْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۙ﴿۹﴾ وَ فِرْعَوْنَ ذِی الْاَوْتَادِ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِیْنَ

जिन्हों ने वादी में[10] पथ्थर की चट्टानें काटीं[11] और फ़िरऔन कि चौमेख़ा करता (सख़्त सज़ाएं देता)[12] जिन्हों ने

طَغَوْا فِی الْبِلَادِ ۙ﴿۱۱﴾ فَاَكْثَرُوْا فِیْهَا الْفَسَادَ ۙ﴿۱۲﴾ فَصَبَّ عَلَیْهِمْ رَبُّكَ

शहरों में सरकशी की[13] फिर उन में बहुत फ़साद फैलाया[14] तो उन पर तुम्हारे रब ने

سَوْطَ عَذَابٍ ۚ﴿۱۳﴾ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ؕ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ

अ़ज़ाब का कोड़ा ब कुव्वत मारा बेशक तुम्हारे रब की नज़र से कुछ ग़ाइब नहीं लेकिन आदमी तो जब उसे उस का रब

رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَ نَعَّمَهٗ ۙ فَیَقُوْلُ رَبِّیْۤ اَكْرَمَنِ ۖ﴿۱۵﴾ وَ اَمَّاۤ اِذَا مَا

आज़माए कि उस को जाह और ने'मत दे जब तो कहता है मेरे रब ने मुझे इ़ज़्ज़त दी और अगर आज़माए

ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَیْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَیَقُوْلُ رَبِّیْۤ اَهَانَنِ ۚ﴿۱۶﴾ كَلَّا بَلْ لَّا

और उस का रिज़्क़ उस पर तंग करे तो कहता है मेरे रब ने मुझे ख़्वार किया यूं नहीं[15] बल्कि तुम यतीम

8 : जिन के क़द बहुत दराज़ थे, उन्हें आ़दे इरम और आ़दे ऊला कहते हैं, मक़्सूद इस से अहले मक्का को ख़ौफ़ दिलाना है कि आ़दे ऊला जिन की उ़म्रें बहुत ज़ियादा और क़द बहुत त़वील और निहायत क़वी और तुवाना थे उन्हें अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया तो येह काफ़िर अपने आप को क्या समझते हैं और अ़ज़ाबे इलाही से क्यूं बे ख़ौफ़ हैं। **9 :** ज़ोर व क़ुव्वत और तूले क़ामत में। आ़द के बेटों में से शद्दाद भी है जिस ने दुन्या पर बादशाहत की और तमाम बादशाह इस के मुत़ीअ़ हो गए और इस ने जन्नत का ज़िक्र सुन कर बराहे सरकशी दुन्या में जन्नत बनानी चाही और इस इरादे से एक शहरे अ़ज़ीम बनाया जिस के महल सोने चांदी की ईंटों से ता'मीर किये गए और ज़बर जद और याक़ूत के सुतून उस की इमारतों में नस्ब हुए और ऐसे ही फ़र्श मकानों और रस्तों में बनाए गए, संगरेज़ों की जगह आबदार मोती बिछाए गए, हर महल के गिर्द जवाहिरात पर नहरें जारी की गईं, क़िस्म क़िस्म के दरख़्त हुस्ने तर्ज़ीन के साथ लगाए गए, जब येह शहर मुकम्मल हुवा तो शद्दाद बादशाह अपने आ'याने सल्त़नत के साथ उस की त़रफ़ रवाना हुवा, जब एक मन्ज़िल फ़ासिला बाक़ी रहा तो आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस से अल्लाह तआ़ला ने उन सब को हलाक कर दिया। ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया के अ़ह्द में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन क़िलाबा सह़राए अ़दन में अपने गुमे हुए ऊंट को तलाश करते हुए उस शहर में पहुंचे और उस की तमाम ज़ैबो ज़ीनत देखी और कोई रहने बसने वाला न पाया, थोड़े से जवाहिरात वहां से ले कर चले आए। येह ख़बर अमीरे मुआ़विया को मा'लूम हुई, इन्हों ने उन्हें बुला कर ह़ाल दरयाफ़्त किया ? उन्हों ने तमाम क़िस्सा सुनाया। तो अमीरे मुआ़विया ने का'ब अह़बार को बुला कर दरयाफ़्त किया कि क्या दुन्या में कोई ऐसा शहर है ? उन्हों ने फ़रमाया : हां जिस का ज़िक्र क़ुरआने पाक में भी आया है, येह शहर शद्दाद बिन आ़द ने बनाया था, वोह सब अ़ज़ाबे इलाही से हलाक हो गए, उन में से कोई बाक़ी न रहा और आप के ज़माने में एक मुसल्मान सुर्ख़ रंग, कबूद चश्म, क़सीरुल क़ामत (नीली आंखों, छोटे क़द वाला) जिस की अब्रू पर एक तिल होगा, अपने ऊंट की तलाश में दाख़िल होगा। फिर अ़ब्दुल्लाह बिन क़िलाबा को देख कर फ़रमाया : बख़ुदा वोह शख़्स येही है। **10 :** या'नी वादियुल क़ुरा में **11 :** और मकान बनाए। उन्हें अल्लाह तआ़ला ने किस त़रह़ हलाक किया **12 :** उस को जिस पर ग़ज़ब नाक होता था। अब आ़द व समूद व फ़िरऔ़न इन सब की निस्बत इर्शाद होता है : **13 :** और मा'सियत व गुमराही में इन्तिहा को पहुंचे और अ़ब्दिय्यत की ह़द से गुज़र गए। **14 :** कुफ़्र और क़त्ल और ज़ुल्म कर के **15 :** या'नी इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत दौलत व फ़क़्र पर नहीं, येह उस की ह़िक्मत है कभी दुश्मन को दौलत देता है कभी बन्दए मुख़्लिस को फ़क़्र में मुब्तला करता है, इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत त़ाअ़त व मा'सियत पर है, कुफ़्फ़ार इस ह़क़ीक़त को नहीं समझते।

www.dawateislami.net

تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿١٨﴾ وَتَاْكُلُوْنَ

की इज़्ज़त नहीं करते[16] और आपस में एक दूसरे को मिस्कीन के खिलाने की रग़बत नहीं देते और मीरास

التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ

का माल हप हप खाते हो[17] और माल की निहायत महब्बत रखते हो[18] हां हां जब ज़मीन टकरा

الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِايْٓءَ

कर पाश पाश कर दी जाए[19] और तुम्हारे रब का हुक्म आए और फ़िरिश्ते क़तार क़तार और उस दिन

يَوْمَىِٕذٍ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ﴿٢٣﴾

जहन्नम लाई जाए[20] उस दिन आदमी सोचेगा[21] और अब उसे सोचने का वक़्त कहां[22]

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَىِٕذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ

कहेगा हाए किसी तरह मैं ने जीते जी नेकी आगे भेजी होती तो उस दिन उस का सा अ़ज़ाब[23]

اَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىِٕنَّةُ ﴿٢٧﴾

कोई नहीं करता और उस का सा बांधना कोई नहीं बांधता ऐ इत्मीनान वाली जान[24]

ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾

अपने रब की तरफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो

وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾ ع ١٥

और मेरी जन्नत में आ

16 : और बा वुजूद दौलत मन्द होने के उन के साथ अच्छे सुलूक नहीं करते और उन्हें उन के हुक़ूक़ नहीं देते जिन के वोह वारिस हैं। मुक़ातिल ने कहा कि उमय्या बिन ख़लफ़ के पास क़ुदामा बिन मज़ऊ़न यतीम थे, वोह उन्हें उन का हक़ नहीं देता था। **17 :** और हलाल व हराम का इम्तियाज़ नहीं करते और औ़रतों और बच्चों को विरसा नहीं देते, उन के हिस्से खुद खा जाते हो, जाहिलिय्यत में येही दस्तूर था। **18 :** इस को ख़र्च करना ही नहीं चाहते। **19 :** और उस पर पहाड़ और इमारत किसी चीज़ का नामो निशान न रहे **20 :** जहन्नम की सत्तर हज़ार बागें होंगी, हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते जम्अ़ हो कर उस को खींचेंगे और वोह जोश व ग़ज़ब में होगी, यहां तक कि फ़िरिश्ते उस को अ़र्श के बाईं जानिब लाएंगे, उस रोज़ सब "नफ़्सी नफ़्सी" कहते होंगे, सिवाए हुज़ूरे पुरनूर हबीबे ख़ुदा सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के कि हुज़ूर "या रब्बि उम्मती उम्मती" फ़रमाते होंगे, जहन्नम हुज़ूर से अ़र्ज़ करेगी कि ऐ सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! आप का मेरा क्या वासिता **अल्लाह** तआ़ला ने आप को मुझ पर हराम किया है। (جمل) **21 :** और अपनी तक़्सीर को समझेगा **22 :** उस वक़्त का सोचना समझना कुछ भी मुफ़ीद नहीं। **23 :** या'नी **अल्लाह** का सा **24 :** जो ईमान व ईक़ान पर साबित रही और **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म के हुज़ूर सरे ताअ़त ख़म करती रही। येह मोमिन से वक़्ते मौत कहा जाएगा जब दुन्या से उस के सफ़र करने का वक़्त आएगा।

www.dawateislami.net